अथवा

ऐसे अवसरों पर उनके मन को संतुलित रखने के लिए बहुत प्रयत्न करना पड़ता है । राजनीति साहित्य नहीं है । उसमें एक-एक क्षण का महत्व है । कभी-कभी क्षण के लिए भी चूक जाएँ, तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है । राजनैतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है । साहित्य उनके जीवन का पहला चरण था ।

(ख) इस देश की प्रजा के हृदय में कोई स्मृति-मंदिर बना जाने की शक्ति आप में है । पर यह सब तब हो सकता है, कि वैसी स्मृति की कुछ कदर आपके हृदय में भी हो । स्मरण रहे धातु की मूर्तियों के स्मृतिचिन्ह से एक दिन किले का मैदान भर जायेगा ।

अथवा

बहुत से लोग अंतर की आवाज़ को आँख मूँद कर मान लेते हैं । मैं नहीं मान पाता । आँख खोलने पर भी यदि अंतर की आवाज़ ठीक जचे तो मान लेना चाहिए । क्योंकि उस अवस्था में भीतर और बाहर का तुक मिल जाता है । शिवजी ने अंतर और बाहर का तुक मिलाने के लिए ही तो देवदारु को चुना था ।

(ग) वास्वत में कर्म, जिनके सम्बन्ध में देश, काल और पात्र के अनुसार ये कहा जा सकता है कि वे सम्पूर्ण रूप से न तो भले हैं और न बुरे हैं, कभी समाज के

द्वारा ग्रहण किये जाते हैं, कभी त्याज्य होते हैं । दुरुपयोग से मानवता के प्रतिकूल होने पर अपराध कहे जाने वाले कर्मों से जिस युग के लेखक समझौता कराने का प्रयत्न करते हैं, वे ऐसे कर्मों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं । व्यक्ति की दुर्बलता के कारण की खोज में व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक अवस्था और सामाजिक रूढ़ियों को पकड़ा जाता है ।

अथवा

सत्, चित्त और आनंद ब्रह्म के इन तीन स्वरूपों में से काव्य और भक्ति मार्ग 'आनंद' स्वरूप को लेकर चले । विचार करने पर लोक में इस आनंद की अभिव्यक्ति की दो अवस्थाएँ पायी जाएँगी—साधनावस्था और सिद्धावस्था । अभिव्यक्ति के क्षेत्र में ब्रह्म के 'आनंद' स्वरूप का सतत् आभास नहीं रहता, उसका आविर्भाव और तिरोभाव होता रहता है ।

2. हिंदी नाटक के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

प्रसादोत्तर हिंदी नाटकों की विशेषताएँ लिखिए ।

3. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के बदलते प्रतिमानों का सफल उदाहरण है । विवेचन कीजिए । 15

अथवा

'अजातशत्रु' एक सफल ऐतिहासिक नाटक है । उदाहरणों सहित सिद्ध कीजिए ।

अथवा

'कोणार्क' नाटक समकालीनता की दृष्टि से एक सफल नाटक है । इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

4. 'शिवाजी का सच्चा स्वरूप' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए । 8

अथवा

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की एकांकी के तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए ।

5. शुक्लोत्तर हिंदी निबंधों की विशेषताएँ बताइए । 8

अथवा

हिंदी निबंध के विकास का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।

6. निबंध के तत्वों के आधार पर 'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध की समीक्षा कीजिए । 8

अथवा

बालमुकुंद गुप्त के निबंध 'शिवशंभू के चिट्ठे **बनाम** लॉर्ड कर्जन' का प्रतिपाद्य लिखिए ।

This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5430**

Unique Paper Code : **205555** **E**

Name of the Paper : **Natak Ekanki Evam Nibandh**

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi Discipline**

Semester : **V**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7+7+7=21

(क) वह अभागा श्रीधर मैं ही हूँ । .... विशु तो मेरा छद्म नाम है, जो मैंने शवर अटीविका से भाग आने पर रख लिया था । मैं ही वह श्रीधर हूँ जिसके कारण तुम्हारी माँ को इतने कष्ट उठाने पड़े । मैं ही वह कठोर, पापी, निर्दयी तुम्हारा पिता हूँ ।

अथवा

यदि पुरुष इन कामों को कर सकता है तो स्त्रियाँ क्यूँ न करें ? क्या उन्हें अंत:करण नहीं है ? क्या स्त्रियाँ अपना कुछ अस्तित्व नहीं रखतीं ? क्या उनका जन्मसिद्ध कोई अधिकार नहीं है ? क्या स्त्रियों का सब कुछ, पुरुषों की कृपा से मिली हुई भिक्षा मात्र है ? मुझे इस तरह पदच्युत करने का किसी को क्या अधिकार था ?

P.T.O.